# जलीय पर्यावरण और मात्स्यिकी

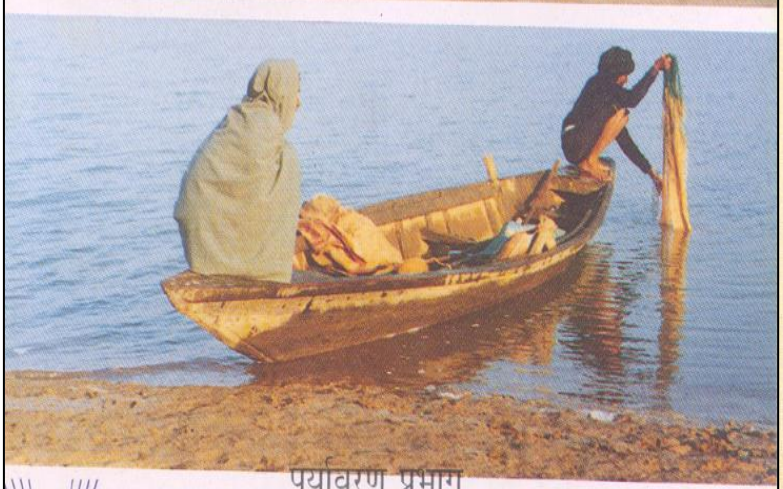

पर्यावरण प्रभाग
केन्द्रीय अंतर्स्थलीय प्रग्रहण मात्स्यकी अनुसंधान संस्थान
*भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्*
बैरकपुर - 743101 : पश्चिम बंगाल

संतुलित पर्यावरण क्या है ?
नीला आकाश, स्वच्छ जल
पवित्र नदियाँ, पक्षियों का कलरव
स्वस्थ जीव, रोगमुक्त जीवन
इसे ही कहते हैं, संतुलित पर्यावरण ।

जल ही जीवन है, को जानो,
इसकी उपयोगिता को पहचानो,
दूषित हुए अगर ये संसाधन,
मिट जाएगी हमारी सभ्यता की पहचान ।

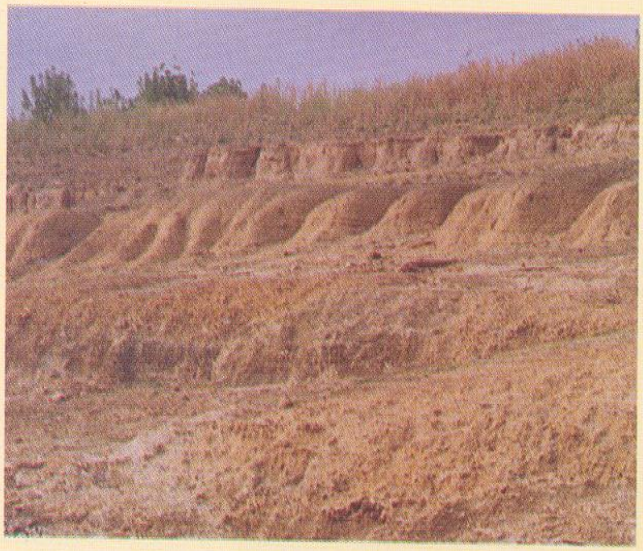

अंधा-धुंध पेड़ की कटाई,
जल में अत्यधिक मिट्टी आई,
जलीय जीवों के जीवन को खतरा,
बेजर होता जल सारा ।

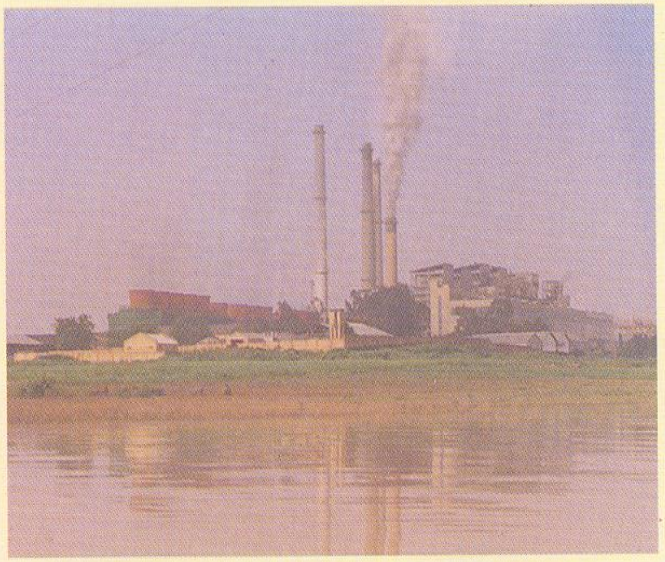

बढ़ते जन, घटते वन,
बढ़ता मल, प्रदूषित जल,
बढ़ते रेत, घटते खेत,
रे 'मानव' अब भी तो चेत ।

जैव-विविधता के ये खजाने,
राष्ट्रीय धरोहर हैं ये अपने ।
इनकी उतरजीविता, इनका संरक्षण,
आज की आवश्यकता, तभी बचें संसाधन ।

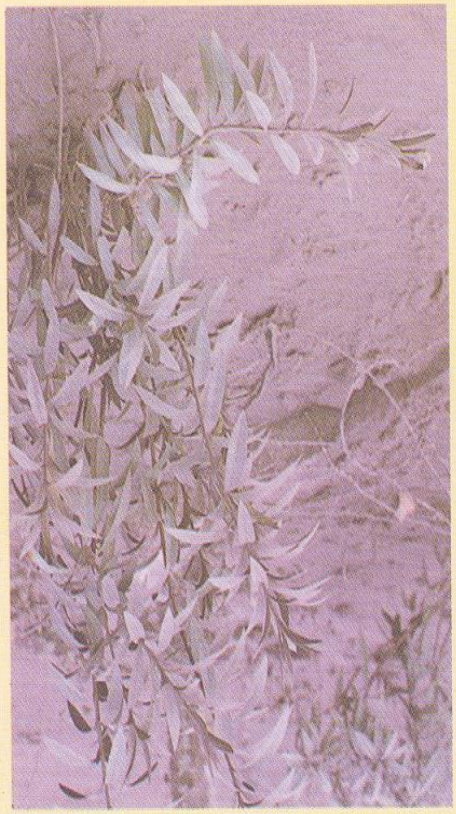

अंधाधुंध खनन और खान,
मुरझाई वनस्पति,
क्या बचेंगे हमारे प्राण ?

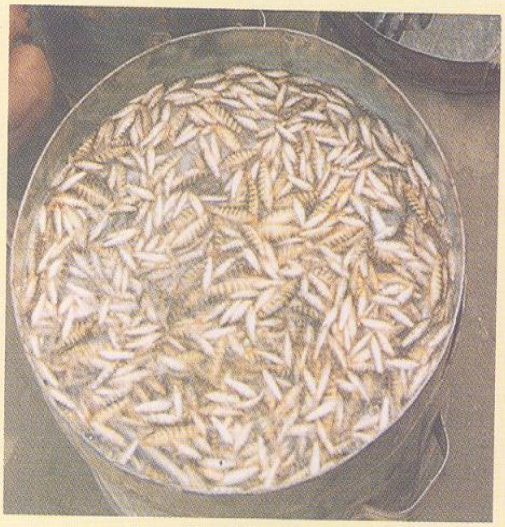

दूषित द्रव्यों का निरंतर प्रवाह,
मुश्किल हो रहा मछलियों का निर्वाह,
जलीय प्रदूषण के बढ़ रहे प्रकोप,
मत्स्य प्रजातियाँ हो रही अलोप ।

अत्यधिक बीजारोपण, अधिक पोषण
अधिक बीमारी, घटे उत्पादन,
आये गरीबी, मरे किसान,
नहीं मिलता क्षमता से अधिक उत्पादन,
गंभीरता से करें इस पर मनन और चिंतन ।

स्वस्थ प्रजनन ही उत्पादन का आधार,
गर्भित मछलियों का न करें शिकार ।

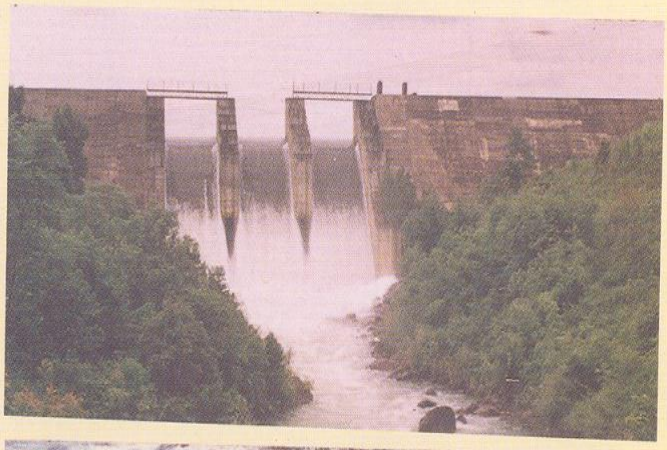

नदी तंत्र को हम अत्यधिक छेड़ रहे है,
जहाँ तहाँ बेड़ा बना रहै,
घट रहा है जल का आयतन,
बाधित हो रहा मछलियों का प्रजनन ।

अवश्य करें मछली और झींगे का पालन,
अधिक से अधिक धन कमाएँ, कर इनका लालन,
पर वैसी खेती हम क्यों करें जो हो विनाशकारी,
क्यों आयात करें हम विदेश से माहामारी ?

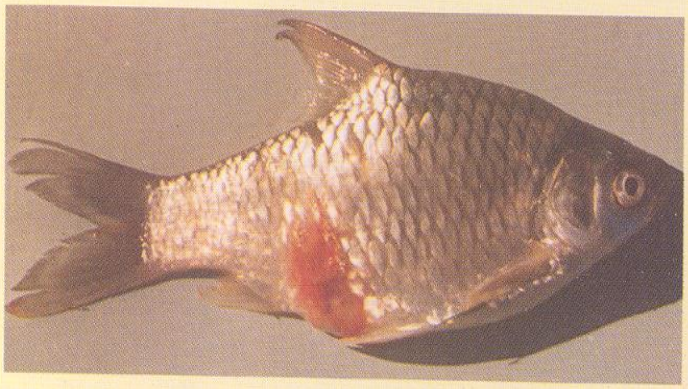

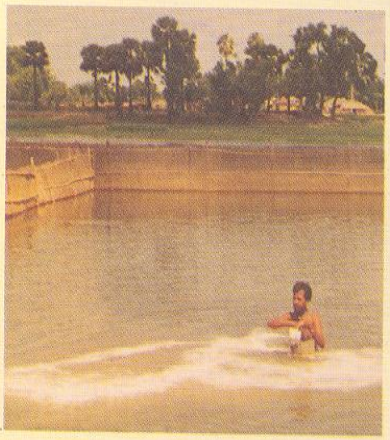

मछलियाँ अगर दिखें बीमार,
समझें प्रदूषण के हैं आसार,
जल में चुने का करें व्यवहार,
जल शुद्धिकरण ही है एक मात्र उपचार

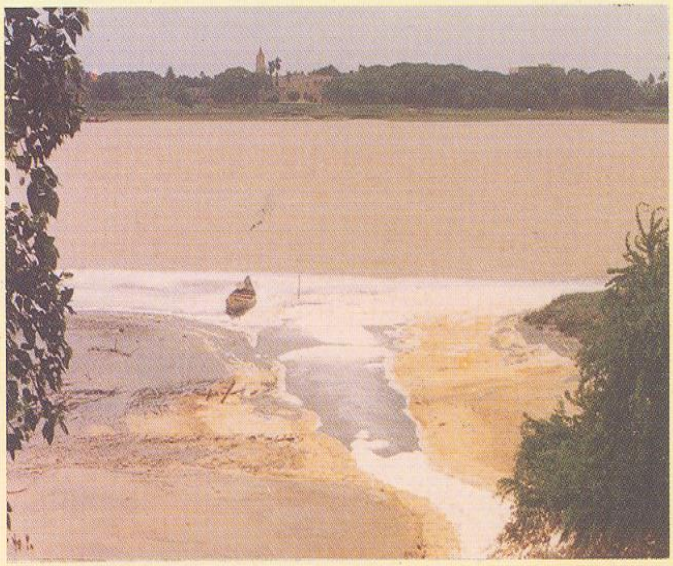

जल में मल-जल का आगमन,
साथ आयें अवांक्षित पदार्थ जो है विष समान,
जलीय पर्यावरण को, ये भेद रहे,
जीव-जंतुओं के अंग, ये छेद रहे ।

कल-करखानों से आया मल,
झेल रहे जल जीव यह दावानल ।
जल की रानी तड़प रही हर पल,
घावग्रसित काया उसकी रही गल ।

वील, झील हो अथवा मान,
बढ़ रहे सुपोषण और अपतृण ।
लेना है अगर अधिक मत्स्य उत्पादन
वैज्ञानिक पद्धति द्वारा करें इनका नियंत्रण ।

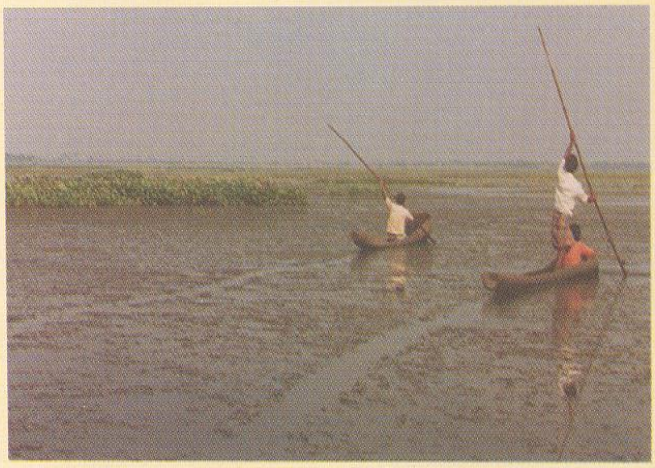

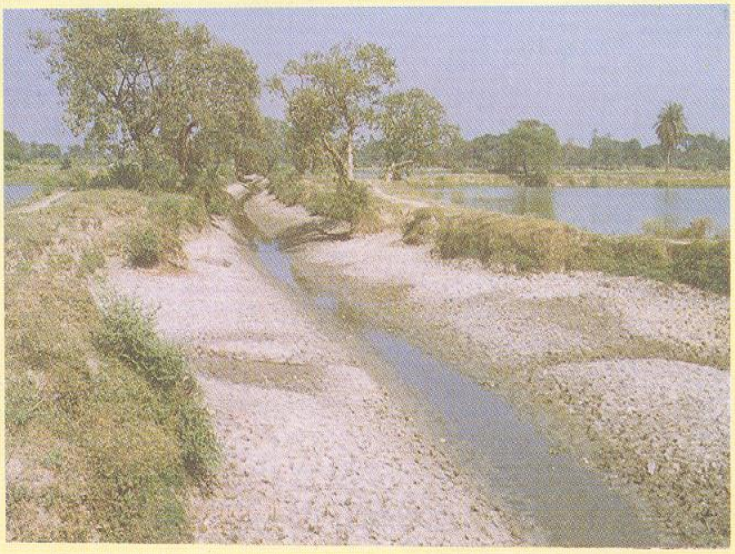

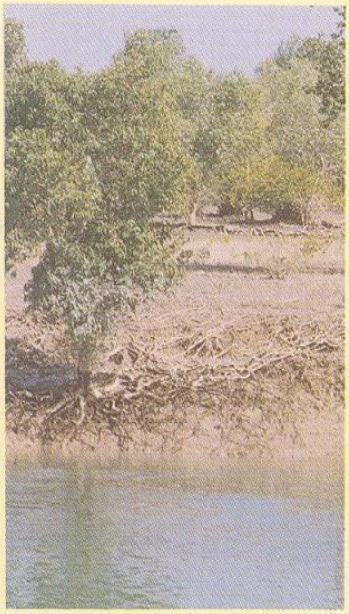

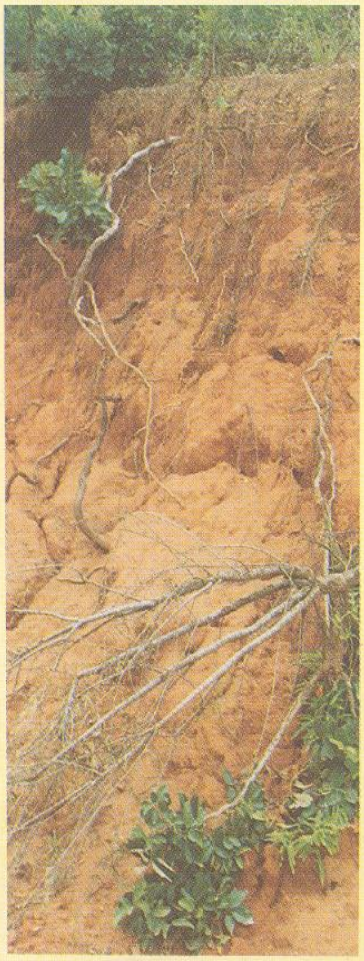

संसाधन ही जब न बच पायेंगे,
उत्पादन कहाँ से आयेंगे ?
संसाधन बचाएँ, ऊपज बढ़ाएँ ।